बी.एच.आई.ई.-143: पर्यावरण का इतिहास

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः **बी.एच.आई.ई.-143**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एच.आई.ई -143** /ए.एस.एस.टी./टी.एम.ए./**2026-2027**
अधिकतम अंकः **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित है। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

सत्रीय कार्य - I

निम्नलिखित वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1) 'पारिस्थितिकीय नारीवाद' से आप क्या समझते हैं? भारतीय संदर्भ में पारिस्थितिकीय नारीवाद को स्पष्ट करते हुए व्याख्या कीजिए। 20

2) भारत में पर्यावरण की रक्षा करने में ग़ैर-सरकारी संगठनों (NGOs) और पर्यावरणीय आंदोलनों की भूमिका पर टिप्पणी कीजिए। 20

सत्रीय कार्य - II

निम्नलिखित मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3) मध्यकालीन भारत में मानव-पर्यावरण संबंध, अंतःक्रिया तथा अंतराफलक को आप किस प्रकार देखते हैं? 10

4) 'हरित साम्राज्यवाद' को परिभाषित कीजिए। हरित साम्राज्यवाद के प्रति यूरोपीय उपनिवेशवाद के नज़रिये का आकलन कीजिए। 10

5) भारतीय दर्शन में वनों, झीलों आदि जैसे पर्यावरणीय तत्वों एवं घटकों को किस प्रकार दर्शाया गया है? 10

सत्रीय कार्य - III

निम्नलिखित लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6) पर्यावरणीय इतिहास 6

7) प्राचीन भारत के दौरान नदी-घाटी सभ्यताओं में जल संसाधनों की भूमिका 6

8) ईस्ट इंडिया कम्पनी के अंतर्गत शिकार 6

9) जैवविविधता और पर्यावरणीय संरक्षण 6

10) *संगम* युग के दौरान तिणै की अवधारणा 6

1) 'पारिस्थितिकीय नारीवाद' से आप क्या समझते हैं? भारतीय संदर्भ में पारिस्थितिकीय नारीवाद को स्पष्ट करते हुए व्याख्या कीजिए।

उत्तर

प्रस्तावना

पारिस्थितिकीय नारीवाद या इकोफेमिनिज्म ऐसा विचार है जो स्त्रियों पर सामाजिक प्रभुत्व और प्रकृति के शोषण के बीच संबंध को समझने का प्रयास करता है। इसका मूल तर्क यह है कि जिस पितृसत्तात्मक सोच में नियंत्रण, प्रभुत्व और संसाधनों पर एकाधिकार को महत्व मिलता है, वही सोच अनेक बार महिलाओं और प्राकृतिक संसाधनों - दोनों - के प्रति शोषणकारी व्यवहार को जन्म देती है। इसलिए पर्यावरण की समस्या को केवल पेड़, पानी और प्रदूषण की समस्या मानना पर्याप्त नहीं है; इसके साथ यह भी देखना पड़ता है कि संसाधनों के नष्ट होने का बोझ समाज के अलग-अलग वर्गों, विशेषकर महिलाओं, पर कैसे पड़ता है।

पारिस्थितिकीय नारीवाद की मुख्य धारणा

इकोफेमिनिज्म प्रकृति और स्त्री को एक ही चीज नहीं मानता, बल्कि उन सत्ता-संबंधों पर ध्यान देता है जिनमें दोनों को अधीन, उपयोग की वस्तु या नियंत्रित करने योग्य माना जाता है। आधुनिक विकास की कई परियोजनाएँ जंगल, जल, भूमि और जैवविविधता पर दबाव डालती हैं। ग्रामीण समाज में पानी लाना, ईंधन और चारा जुटाना, पशुपालन, बीजों का संरक्षण और घरेलू खाद्य सुरक्षा जैसे कार्य प्रायः महिलाओं से जुड़े होते हैं। इसलिए जंगल कटने, जलस्रोत सूखने या भूमि क्षरण होने पर महिलाओं का श्रम और समय तुरंत बढ़ता है। इस अनुभव ने पर्यावरणीय संघर्षों में महिलाओं की सक्रियता को मजबूत किया।

भारतीय संदर्भ

भारत में पारिस्थितिकीय नारीवाद का अर्थ स्थानीय जीवन, आजीविका और प्राकृतिक संसाधनों के बीच गहरे संबंध से समझा जा सकता है। हिमालयी क्षेत्रों में महिलाओं का दैनिक जीवन जंगल और जलस्रोतों से जुड़ा रहा है। वन केवल लकड़ी नहीं देते, बल्कि ईंधन, पशुओं का चारा, पत्तियाँ, फल, औषधीय संसाधन, मिट्टी की नमी और जलस्रोतों की सुरक्षा में भी योगदान करते हैं। जब वनों का व्यावसायिक दोहन बढ़ा, तब स्थानीय महिलाओं ने इसे अपने परिवार और गांव के जीवन पर सीधा आघात माना।